Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 1, January-2019, ISSN 2230-7540

मुंशी प्रेमचंद के कथा साहित्य में आधुनिक नारी

Vinita Kumari*

[1] Research Scholar, Department of Hindi, Sri Satya Sai University of Technology & Medical Sciences, Sehore (MP)

सार – भारत में और हिन्दी में नारी विमर्श पर हमेशा से बड़ी-बड़ी चर्चा होती है। विद्वानों लेखकों के अपने-अपने मत होते हैं, प्रेमचंद के इस संबंध में विचारों को जानने से पहले यह आवश्यक है कि, आज के नारी विमर्श के मसीहा किस प्रकार उसकी यौन शुचिता को नष्ट करने तथा शरीर के मुक्त उपभोग में ही नारी-मुक्ति का दिया स्वप्न देख रहे हैं। भू-मंडलीकरण के इस दौर में नारी एक वस्तु बन गयी है। और उसका शरीर केन्द्र में आ गया है।

----------X----------

भारत में 19 शताब्दी में राजा राममोहन राय के द्वारा जो नव जागरण आरंभ हुआ उसमें नारी जागरण भी एक महत्वपूर्ण अंश था। उन्होंने वर्ष 1929 में सती प्रथा के निषेध का कानून बनवाकर नारी के उत्थान के इतिहास का आरंभ किया। इसके उपरांत ईश्वरचंद विद्यासागर देवेन्द्रनाथ टैगोर, केशवचंद्र, ब्रहम समाज, आर्य समाज विवेकानुद आदि ने 19वीं शताब्दी में नारी जागरण की बुनियाद रख दी। इस प्रकार प्रेमचंद अपने निजी जीवन के साथ अपने औपन्यासिक पात्रों के जीवन में भी नारी के शील-हरण अथवा उसकी यौन शुचिता को कलंकित करने के पुरष के किसी भी प्रयास को क्षमा नहीं कर सके। प्रेमचंद हिन्दी साहित्य में एक ऐसे कथाकार है जिन्होंने नारी जागरण का शंखनाद किया, उसके अबला, दासी जैसे कलंक को मिटाया उसे शिक्षित किया और राजनीति में सक्रिय किया, उसे विधवा विवाह, मेल विवाह दहेज, तलाक आदि कुप्रथाओं के प्रति सचेत किया और अपनी स्वाधीनता तथा अस्तित्व एवं अधिकारों के लिए संघर्ष को शक्ति प्रदान की उन्होंने अपने नारी पात्रों में आदर्श माता पत्नि प्रेमिका तथा बहन के चरित्र उत्पन्न किये तथा ऐसे नारी पात्रों की सर्जना की जो अन्याय शोषण तथा दमन की मुक्ति के लिए लड़ सकी, लेकिन वे अपने किसी नारी पात्र को इतना अधिक आधुनिक नहीं पा पाये की वह विवाह पूर्व यौन संबंध बनाये प्रेमचंद नारी की यौन शुचिता पर कोई ढील तथा कोई समझौता करने को तैयार नहीं है। सेवा सदन की सुमन ने गृहिणी बनने के स्थान पर? इंद्रियों के आनंद भोरा? की शिक्षा पायी थी तथा उसे अपने रूप सौंदर्य पर अभिमान था वह इसी कारण चिपकी आड़ से अपने शारीरिक सौंदर्य को दिखाने में असमी आनंद का अनुभव करती है, सुमन स्वयं अपनी पवित्रता भंग कर वेश्या बन जाती है। प्रेमचंद ने जमीदार का करिंदा गौस खं मनोहर की पत्नि बिलासी का अपमान करता है। रंगभूमि उपन्यास में नारी की यौन शुचिता के कई प्रसंग है एक प्रसंग विनय-सौफिया का है जो प्रेम-प्रेमिका है, दूसरा सूरदास सुभगी का है, जो अपयश को भारी बनाता है, सूरदास अदालत में दंडित होता है तथा तीसरा सुभारी के साथ घीसू-आदि बलात्कार की चेष्टा करता है।

प्रेमचंद के नारी दर्शन में इस प्रकार दोनों ही रूपों में नारी की यौन-शुचिता की रक्षा का कठोर आग्रह है एक पुरूष द्वारा नारी का धन-बल तथा छल-बल से उसका शील हरण तथा दूसरा, नारी का स्वयं अपने सतीत्व का बाजार में बेचना। प्रेमचंद का युग नारी उत्थान का युग तथा एक नयी नारी का जन्म हो रहा था। वह आधुनिक नारी परम्परागत भारतीय नारी की बुनियादी पर ही निर्मित और विकसित हो रही थी। वह अपनी परम्परागत मूल्यों के प्रति समर्पित थी और साथ ही अपने अधिकार स्वतंत्रता और अस्तित्व का आग्रह कर रही थी। यह प्रेमचंद ही नहीं नारी के उस युग की मांगी थी। गोदान में मेहता कता है। नारी केवल माता है इसके उपरांत वह जो कुछ है, वह सब मातृत्व का उपक्रम मात्र मातृत्व संसार की सबसे बड़ी साधना सबसे बड़ी तपस्या, सबसे बड़ा त्याग और सबसे महान विजय है, प्रेमचंद का यह नारी दर्शन था तथा भारतीय नारी का भी यही जीवन दर्शन है। भारतीय नारी में आधुनिकता का प्रवेश भी इसी आधारभूत दर्शन से ही होगा और वह सभी स्थायी एवं उपयोगी होगा भारत का अर्धनारीश्वर का दर्शन, स्त्री पुरूष की परस्पर एवं एक निष्ठता, विवाह तथा परिवार की पवित्रता एवं परस्पर का अटूट विश्वास किसी भी पश्चिमी यौन आंधी से भारतीय नारी को उसके अधिकार तथा स्वतंत्रता के साथ उसकी यौन-शुचिता को भी बनाये रखेगी।

www.ignited.in

जब पुरूष में नारी के गुण आ जाते है तो वो महात्मा गांधी बन जाती है और अगर नारी में पुरूष के गुण आ जाये तो वह कुलटा बन जाती है। गोदान की ये पंक्तियां प्रेमचंद को नारी को देखने का संपूर्ण नजरिया प्रस्तुत करती है। आज भारत नारी को सशक्त बनाने के लिए क्रांतिकारी दौर से गुजर रहा है, जिस नारी को प्रेमचंद पहले ही सशक्त कर चुके हैं, प्रेमचंद की आधुनिक नारी कर्मभूमि में उतरकर पुरूष से कंधे से कंधे मिलाकर देश की आजादी के लिए संघर्ष करती है? उसे गबन कर लाए हुए पैसों का चंद्रहार स्वीकृत नहीं है। वो एक गरीब किसान के दुख दर्द की सहभागी बन अपना पवित्रता धर्म भी निभाती है, वो बड़े घर की बेटी भी है और उस सारे पुरूष वर्चस्व वाले परिवार में मानो अकेली मानवीय गुणों से संयुक्त है वो मजबूरियों में पडत्रे अपने परिवार के लिए समाज के सामंत वर्ग से बिना डरे ठाकुर के कुंए पे जाकर तत्कालिक व्यवस्था को चुनौती देती है, और कभी एक मां बनकर अपने बच्चे के लिए खुद की जान भी लुटा देती है, प्रेमचंद जी के साहित्य में जो नारी चित्र उभरकर आए हैं, इनको देखकर लगता है कि नारी समाज की मुख्य धारा को प्रतिनिधित्व करती है, और पुरूष हासिये पे फैंक दिए गए है। उकने दो दर्जनों से अधिक उपन्यास कहानियों में निर्मला मंगलसूत्र कर्मभूमि, प्रतिज्ञा तो ऐसे उपन्यास है जो पूर्ण रूपेण नारी चरित्रों पर ही केंद्रित है।

प्रेमचंद जी ने महिला चरित्रों को कर्मशक्ति और साहस के क्षेत्र में पुरूष के समकक्ष प्रस्तुत करते हैं पर महिला की नैसर्गिक अस्मिता गरिमा, और कोमलता को वो अक्षुण्ण रखते हैं, प्रेमचंद का साहित्य उन तमाम आधुनिक महिला सशक्तिकरण के चिंतकों के लिये उदाहकरण प्रस्तुत करता है जो नाीर को सशक्त बनाने के लिये उसके चारित्रिक पतन की पैरवी करते हैं, और उसकी अस्मिता के भौड़े प्रदर्शन को नारी शक्ति का प्रतीक मानते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शुक्ल, त्रिभुवननाथ एवं अन्य (2010): "हिंदी भाषा संरचना", मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।

2. मैटरसन, जे.टी., बीब,एस.ए., एवं वाटसन, एन.एच. (1989): इफेक्टिव स्पीच कम्यूनिकेशन, स्कॉट, फोर्समन एण्ड कंपनी, यूएसए।

3. तरूण, डॉ. हरिवंश (1999): "मानक हिन्दी व्याकरण और रचना", कौशिक प्रिंटर्स, दिल्ली।

4. तिवारी, डॉ. भोलानाथ (1986): "भाषा विज्ञान" किताब महल, इलाहाबाद।

5. प्रसाद, कालिका (1989) "वृहत् हिन्दी कोष" ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी।

6. प्रसाद, डॉ. वासुदेव नंदन (1997): "आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना" भारती भवन, दिल्ली।

Corresponding Author

Vinita Kumari*

Research Scholar, Department of Hindi, Sri Satya Sai University of Technology & Medical Sciences, Sehore (MP)

www.ignited.in